



फरवरी: 2021

वर्ष : 4 अंक : 5

सिफरी मासिक समाचार

# नील क्रांति की ओर अग्रसर



निदेशक की कलम से



“परिस्थितियां मानव नियंत्रण से बाहर हैं, लेकिन हमारा आचरण हमारे ही नियंत्रण में है।”

बेंजामिन डिसरायलि

संस्थान का मासिक समाचार, फरवरी 2021  
आपके समक्ष प्रस्तुत है।

हम सभी के लिए फरवरी के महीने का एक विशेष महत्व है। यह अकेला सबसे कम अवधि वाला महीना है जो समान्यतः 28 दिनों का होता है पर प्रत्येक 4 वर्ष पर यह 29 दिनों का हो जाता है जिसे 'अधिवर्ष' कहा जाता है। हालांकि सबसे कम दिन होने पर भी यह एक उल्लास पूर्ण माह है। इस माह वसंत ऋतु का आगमन होता है। सर्दियों के बाद आने वाली वसन्त ऋतु में तापमान में नमी आ जाती है और सभी जगह हरे-भरे पेड़ों और फूलों के कारण चारों तरफ हरियाली और रंगीन दिखाई देता है। वसंत ऋतु के आगमन पर सब लोग वसंत पंचमी का त्यौहार मनाते हैं। देश के बहुत से भागों में इस दिन विद्या की देवी “माँ सरस्वती” की पूजा और अर्चना की जाती है।

वसंत ऋतु के आगमन पर किसान नई फसलों के पकने का इंतजार करने लगते हैं। सरसों के पीले-पीले फूल खिल-खिल कर खुशी व्यक्त करते हैं। सरोवरों में कमल के फूल खिल कर इस तरह पानी को छिपा लेते हैं जो हमें यह संकेत दे रहे हैं कि अपने सारे दुखों को समेट कर खुल के जीवन का आनंद ले।

मैं आशा करता हूँ कि जिस प्रकार वसंत ऋतु अच्छी भावनाएं, अच्छा स्वास्थ्य और पौधों को नया जीवन देती है उसी प्रकार हम भी अच्छी भावनाएँ रखें जिससे हमारे जीवन में नई ऊर्जा का संचार हो और हम अपने लक्ष्यों के प्रति अधिक सचेष्ट होकर उन्हें प्राप्त करें।

आइये, हम सभी मिलकर वसंत ऋतु का स्वागत एक नए संकल्प के साथ करें।

धन्यवाद,

बि.दास  
(बसन्त कुमार दास)



## संस्थान में 72वां गणतंत्र दिवस पालन



संस्थान में 72वां गणतंत्र दिवस बड़े उत्साह और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। संस्थान परिसर को रोशनी, झंडे और फूलों से खूबसूरती से सजाया गया था। इस अवसर को चित्रित करने के लिए संस्थान परिसर में एक सुंदर रंगोली भी तैयार की गई थी। 26 जनवरी, 2021 की सुबह, संस्थान के सुरक्षा गार्डों द्वारा परेड मार्च के साथ उत्सव शुरू हुआ। संस्थान के निदेशक, डॉ. बि. के. दास ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया और उपस्थित समस्त कर्मियों को संबोधित किया। इसके बाद राष्ट्रगान गाया गया। निदेशक महोदय ने अपने संबोधन में संस्थान कर्मियों को 72वें गणतंत्र दिवस की बधाई दी और इस बात पर ध्यान केंद्रित किया कि भारत कोरोना महामारी को समाप्त करने के लिए सचेष्ट है। हमारे देश में विकसित कोरोना वैक्सीन का सफलतम परीक्षण किया गया है और अब दूसरे देशों में भी इसकी लोकप्रियता बढ़ रही है। कोरोना काल की अवधि के दौरान समस्त कठिनाइयों और सीमित संसाधनों के बावजूद हमारे संस्थान के विकास कार्यों पर कोई बड़ा प्रभाव देखने को नहीं मिला अपितु बहुत सारी नई परियोजनाओं की स्वीकृति भी मिली, जैसे, नमामि गंगे के अंतर्गत

स्वच्छ गंगा मिशन-II, सिल्क प्युपा से निर्मित होने वाली मछलियों के लिए फीड जिसकी लागत मूल्य तुलनात्मक तौर पर कम है। कोरोना काल में ऑनलाइन मीटिंग और 'सामाजिक दूरी' द्वारा संस्थान के अनुसंधान कार्यों में लगातार वृद्धि और विकास देखने को मिला। संस्थान कर्मियों की पदोन्नति आदि भी समयानुसार कि गई। निदेशक महोदय ने सभी संस्थान सदस्यों की उनके अथक और लगनशील प्रयासों के लिए प्रशंसा की और साथ ही संस्थान की इस सफलता की कड़ी को बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित किया। इसके पश्चात श्री राजीव लाल, संयुक्त निदेशक (प्रशा.) सह रजिस्ट्रार ने अपने संबोधन में गणतंत्र दिवस समारोह के महत्व पर ध्यान केंद्रित किया। इस अवसर पर संस्थान कर्मियों और उनके पारिवारिक सदस्यों, विशेषकर बच्चों द्वारा देशभक्ति गीत और कविताएं प्रस्तुत की गईं। इस विशेष दिवस पर, निदेशक ने प्रभागों, वैज्ञानिकों, तकनीकीकर्मचारियों, प्रशासनिक, कुशल सहायता कर्मी और शोध छात्रों (रिसर्च स्कॉलर) की श्रेणी निर्धारित करके अक समिति द्वारा







चुने हुये कर्मियों को सर्वश्रेष्ठ पुरुष्कार एवं प्रोत्साहन सर्टिफिकेट प्रदान किये। इसके उपरान्त सभी सदस्यों के बीच मिष्ठान्न पैकेट वितरित किया गया।

इस विशेष अवसर पर नमामि गंगे कार्यक्रम के तहत बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल दासपारा घाट में मछलियों की रैंचिंग और टैगिंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। चूंकि गंगा नदी की व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण भारतीय प्रमुख कार्प प्रजातियां मानवजनित गतिविधियों के कारण नदी में घटती जा रही हैं, इसलिए इस नदी में रोहू, कतला, मृगल और कलबासु की कुल 35 हजार अंगुलिकाओं को जल में प्रवाहित किया गया। इसके अलावा, 100 मछलियों को इनके अभिगमन मार्ग के अध्ययन के लिए (बाहरी लॉयल टैग) टैग किया गया था ताकि इन प्राकृतिक मछली आनुवंशिक संसाधनों के संरक्षण के लिए प्रबंधन के उपाय किए जा सकें।

इस दिवस के उपलक्ष्य में सद्भाव और भाईचारे की भावना को बढ़ावा देने के लिए संस्थान परिसर में एक फ्रेंडली वॉलीबॉल मैच का



आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान कर्मियों ने बड़े उत्साह और आनंद के साथ भाग लिया।



इस दिन सम्मानित होने वाले संस्थान कर्मियों की सूची निम्नलिखित है।

सर्वश्रेष्ठ प्रभाग	-	नदीय परितंत्र एवं मात्स्यिकी प्रभाग
सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक	-	डा. रंजन कुमार मात्रा, प्रधान वैज्ञानिक, नदीय परितंत्र एवं मात्स्यिकी प्रभाग
सर्वश्रेष्ठ तकनीकी कर्मी	-	श्रीमति सुचेता मजूमदार, मुख्य तकनीकी अधिकारी, एफआरईएम प्रभाग और श्री आशीष रॉय चौधुरी, तकनीकी अधिकारी, नदीय परितंत्र एवं मात्स्यिकी प्रभाग
सर्वश्रेष्ठ प्रशासनिक कर्मी	-	सुश्री सोहिनी चैटर्जी, निदेशक कक्ष
सर्वश्रेष्ठ कुशल सहायक कर्मी	-	श्री उमाशंकर राम, निदेशक कक्ष
सर्वश्रेष्ठ शोध छात्र	-	श्रीमति शताब्दी गांगुली, शोध छात्र

### "प्रशस्ति पत्र" (सर्टिफिकेट ऑफ एप्रिसिएशन) से सम्मानित सस्थान कर्मी

डॉ. उत्तम कुमार सरकार, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभागाध्यक्ष, जलाशय एवं आर्द्रक्षेत्र मात्स्यिकी प्रभाग  
 डॉ. बिजय कुमार बेहरा , प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभागाध्यक्ष,  
 डॉ. अरुण कुमार पंडित, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी, कृषि आर्थिकी कक्ष और अन्य वैग्यानिक जैसे  
 डॉ. संजीव कुमार मात्रा, प्रधान वैज्ञानिक  
 डा. अमिय कुमार साहू, वरिष्ठ वैज्ञानिक ,  
 डॉ. सोमा दास सरकार, डॉ. प्रणय परीदा, डॉ. ध्रुव ज्योति सरकार, श्री हिमांशु शेखर स्वैन, वैज्ञानिक  
 श्री सुजीत चौधुरी, सुश्री सुनीता प्रसाद, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी  
 श्रीमति संगीता चक्रवर्ती, तकनीकी सहायक  
 श्री सुदितो गुप्ता, श्री सुबीर दास, श्री चन्दन चक्रवर्ती, सहायक प्रशासनिक अधिकारी  
 श्री सोमनाथ बनर्जी, अवर श्रेणी क्लर्क  
 श्री शंकर रेड्डी, कुशल सहायक  
 सुश्री श्रेया भट्टाचार्य, वाई पी-II





संस्थान में विशेष अवसरों पर संस्थान परिसर में आकर्षक और विषय उन्मुख रंगोली बनाने की परंपरा रही है। इसके लिए एक रंगोली टीम है जो अवसर/ त्योहारों की उपयुक्तता को ध्यान में रख कर रंगोली को तैयार करते हैं – चाहे



दीपावली हो या संस्थान/परिषद विशेष कार्यक्रम। इसी परंपरा को ध्यान में रखते हुये 72वे गणतंत्र दिवस पर भी एक रंगोली तैयार की गयी थी जो देश की अखंडता, एकता, विकास और सैनिकों के सम्मान का चित्रण करती है।





## गंगा नदी में रैचिंग और टैगिंग : राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन परियोजना के तहत वाइल्ड मछलियों के जर्मप्लाज्म पुनरुत्थान

भारत के 72वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर, संस्थान ने नमामि गंगे कार्यक्रम के तहत 26 जनवरी, 2021 को कोलकाता, पश्चिम बंगाल के दासपारा घाट बैरकपुर में मछलियों की टैगिंग और रैचिंग कार्यक्रम का आयोजन किया। रोहू, कतला और मृगल को आमतौर पर भारतीय मुख्य कार्प (IMC) के रूप में जाना जाता है पर मानवजनित गतिविधियों के कारण इनकी संख्या में गंभीर रूप से गिरावट आई है। इसी कारण से यह आवश्यक हो गया है कि गंगा की इन महत्वपूर्ण मछलियों को फिर से स्थापित किया जाए। यह कार्यक्रम राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) परियोजना के



प्रधान अन्वेषक और संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के.दास की उपस्थिति में आयोजित किया गया। उन्होंने वर्तमान परियोजना की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर श्री डी. के. महाजन, कार्यकारी अभियंता और श्री जॉय कृष्ण प्रराज, सहायक, इंदिरा गांधी वाटर ट्रीटमेंट प्लांट (IGWTP) के इंजीनियर अतिथि के रूप में उपस्थित थे। संस्थान के प्रयासों को श्रेय देते हुए, उन्होंने इस पवित्र नदी की विकट स्थिति के बारे में बताया और स्थानीय लोगों से गंगा को स्वच्छ बनाने के लिए सक्रिय

रूप से भाग लेने के लिए आग्रह किया। गंगा नदी में रोहू, कतला, मृगल और कलबासु की 35 हजार अंगुलिकाओं को प्रवाहित किया गया। रैचिंग के अलावा, 100 मछलियों के प्रवासीय पथ का पता लगाने के लिए (बाहरी लॉयल टैग) टैग किया गया। संस्थान ने हमारे देश के राष्ट्रीय जलीय जीव, डॉल्फिन के संरक्षण हेतु बड़े पैमाने पर जागरूकता कार्यक्रम भी चलाया गया। कार्यक्रम का समन्वय श्री एच.एस. स्वैन, और एनएमसीजी टीम के सदस्यों द्वारा किया गया और मीडिया द्वारा इस कार्यक्रम को कवर किया गया।





## संस्थान ने कृषि विज्ञान केंद्र, रामकृष्ण मिशन, सारगाछी के सहयोग से अनुसूचित जन जातीय उपयोजना के तहत मुर्शिदाबाद में पांच नए आर्द्रक्षेत्रों में पेन कल्चर का प्रदर्शन



संस्थान ने कृषि विज्ञान केंद्र, रामकृष्ण मिशन आश्रम, सारगाछी के सहयोग से निदेशक, डॉ. बि. के. दास ने अनुसूचित जनजाति उपयोजना के तहत मुर्शिदाबाद के पांच आर्द्रक्षेत्रों में काम शुरू किया। दिनांक 16 जनवरी 2021 को एक जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में 5 आर्द्रक्षेत्रों से 150 से अधिक अनुसूचित जनजाति समुदाय के मछुआरों ने भाग लिया। इन मछुआरों को पेन में मछली पालन और उसके लाभकारी प्रभाव के बारे में जागरूक किया गया।

रामकृष्ण मिशन आश्रम, सारगाछी, मुर्शिदाबाद के सचिव, स्वामी विश्वामयानंद जी (तुषार महाराज) ने मछुआरों को सलाह दी कि वे इस प्रदर्शन से पेन में मछली पालन संबंधी समस्त ज्ञान प्राप्त करें जिससे उन्हें भविष्य में आय वृद्धि में सहायता मिलेगी। अनुसूचित जनजाति







उपयोजना के तहत संस्थान द्वारा पेन में मछली पालन प्रदर्शन के लिए प्रत्येक आर्द्रक्षेत्रों में 2 पेन, 2 टन फीड और दो किंटल मछली के बीज उपलब्ध कराए गए।

संस्थान के निदेशक, डॉ. बि.के. दास ने मछुआरों को पेन पालन, उसके लाभ और दैनिक प्रबंधन के बारे में बताया। उन्होंने आर्द्रक्षेत्रों मत्स्य पालन विकास के लिए आवश्यक आकार वाली संचयन सामग्री का उपयोग करते हुए मत्स्य बीजों को उनके मूल स्थान पर वृद्धि करने पर जोर दिया। पेन में मत्स्य बीज पालन से आर्द्रक्षेत्रों के निवेश की लागत कम हो जाएगी। उन्होंने मछुआरों से आर्द्रक्षेत्रों में पेन पालन और इस पर आधारित मत्स्य विकास के लिए आग्रह किया। निदेशक महोदय ने इस अवसर पर मछुआरों को कोराकल (नाव) वितरित किया। इसी दिन निदेशक महोदय ने दुमनिडा बील, मुर्शिदाबाद का भी दौरा किया और संस्थान द्वारा स्थापित दो पेन में 100 किग्रा अंगुलिकार्ये और 30,000 मत्स्य बीज छोड़े गए। संस्थान के अनुसूचित जनजाति उपयोजना के नोडल अधिकारी, डॉ.पी के परिदा

ने मछुआरों को इस योजना तथा संस्थान द्वारा प्रदान किए जाने वाली सुविधायों के बारे में भी बताया। ध्यानगंगा, कृषि विज्ञान केंद्र, रामकृष्ण मिशन आश्रम, सरगाछी में पेन पालन के प्रदर्शन को लागू करने के लिए स्थानीय समर्थन प्रदान करने की सराहना की। डॉ. सुजन विश्वास, कार्यक्रम समन्वयक, ध्यानगंगा कृषि विज्ञान केंद्र, रामकृष्ण मिशन आश्रम, सरगाछी ने धन्यवाद ज्ञापन किया। श्री कौशिक मंडल, श्री अभिशेक साहा, श्रीमति एंबली, सुश्री श्रेया भट्टाचार्य और श्री उदय, विषय विशेषज्ञ (मत्स्य) ने कार्यक्रम का समन्वय किया।





## केरल के वझानी जलाशय में जनजातीय उप योजना (टीएसपी) के तहत सिफरी एचडीपीई पेन में पर्लस्पॉट कल्चर पर जागरूकता सह प्रशिक्षण कार्यक्रम



संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र कोच्चि में दिनांक 4 जनवरी 2021 को वझानी जलाशय में सिफरी एचडीपीई पेन में पर्लस्पॉट (*Etroplus suratensis*) के पालन पर जागरूकता-सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम का उद्घाटन श्रीमती माजा जोस (डीडीएफ, त्रिचूर) द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में श्री शिवू कुमार (एसआई मत्स्य, वझानी) और श्री पी. गंगाधरन (अध्यक्ष,



वझानी डैम हरिजन- गिरिजन मत्स्य सहकारी समिति) उपस्थिति थे। इस समिति (वाज़हानी, त्रिशूर डीवाई) के वझानी बांध हरिजन समुदाय के मछुआरों ने कार्यक्रम में सक्रियता से भाग लिया। डॉ. दीपा सुधीशन, वैज्ञानिक और प्रभारी अधिकारी संस्थान क्षेत्रीय केन्द्र ने इस कार्यक्रम में वझानी के विशिष्ट आमंत्रित अतिथियों और मछुआरों का स्वागत किया। संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र कोच्चि द्वारा जन जातीय उपयोजना (टीएसपी) कार्यक्रम के तहत मछुआरों को 3 सिफरी एचडीपीई पेन,





7500 मत्स्य बीज और 100 किलोग्राम फीड प्रदान किया गया। कार्यक्रम में डॉ. दीपा सुधीशन, वैज्ञानिक और डॉ. थंगम थेरेसा पॉल, वैज्ञानिक ने सुझाव दिया कि वझानी जलाशय के मछुआरों की आजीविका में सुधार सिफरी एचडीपीई पेन की मदद से हो सकता है। पालन आधारित मत्स्य उपज वृद्धि में सीआईएफआरआई एचडीपीई पेन के उपयोग और महत्व को मछुआरों को समझाया गया। मछुआरों ने जलाशयों में जल के उतार-चढ़ाव को उनकी प्रमुख चिंता का कारण बताया। मछुआरों को मछलियों



के भोजन का समय निर्धारित करने के लिए भी निर्देशित किया गया। कार्यक्रम का सफलतापूर्वक समन्वय श्री एस. मनोहरन, मुख्य तकनीकी अधिकारी और श्री पी.वी. शाजिल, कुशल कर्मचारी की मदद से किया गया।



## संस्थान ने “आजीविका सुधार हेतु हिल्सा मछली का संरक्षण ” पर ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम

संस्थान ने स्वच्छ गंगा राष्ट्रीय मिशन (NMCG), जल शक्ति मंत्रालय, राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड (NFDB), मत्स्य पालन एवं पशु विज्ञान और डेयरी मंत्रालय के सहयोग से गंगा नदी को केंद्रित कर आजीविका सुधार के लिए हिल्सा मत्स्य संरक्षण पर एक ऑनलाइन



प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य सभी हितधारकों के बीच जागरूकता लाना और हिल्सा मत्स्य पालन के लिए विशिष्ट जैव विविधता संरक्षण योजना में सामुदायिक भागीदारी को उजागर करना था। संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने वर्ष 2012 से 2024 तक हिल्सा पर संस्थान दमों हो रहें अनुसंधान गतिविधियों पर प्रकाश डाला। डॉ. दास ने वैज्ञानिकों, मछुआरों, और प्रशासनिक अधिकारियों से “मिशन हिल्सा” पर काम करने का आग्रह किया और हिल्सा संरक्षण कार्यक्रम में युवाओं की भागीदारी पर प्रकाश डाला। प्रो. अब्दुल वहाब, इको फिश (ECOFISH) प्रोजेक्ट-यूएसएआईडी, वर्ल्डफिश, बांग्लादेश के टीम लीडर



ने बांग्लादेश में हिल्सा उत्पादन के सुधार के लिए विज्ञान आधारित सामुदायिक भागीदारी की महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर किया। प्रो. वहाब ने इस बात पर प्रकाश डाला कि बांग्लादेश में हिल्सा मत्स्य सह-प्रबंधन द्वारा हिल्सा उत्पादन में हस्तक्षेप के कारण 2015 से 2020 के दौरान 9% तक वृद्धि हुई है। इस कार्यक्रम में इसके अलावा कुछ महत्वपूर्ण विषयों पर व्याख्यान का आयोजन किया गया, जैसे 1) हिल्सा संरक्षण और आजीविका सुधार के लिए अनुसंधान: सिफरी की वर्तमान पहल;





2) हिल्सा संरक्षण और आजीविका सुधार: बांग्लादेश केस स्टडी; 3) हुगली-भागीरथी नदी में हिल्सा संरक्षण: खतरा और भावी योजनाएं; 4) आजीविका सुधार के लिए गंगा नदी के मध्य खिंचाव में हिल्सा मत्स्य पालन की पुनर्स्थापन: एक समग्र दृष्टिकोण। डॉ. संदीप बेहरा, वरिष्ठ सलाहकार, जैव विविधता संरक्षण, राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (NMCG) ने विशेष रूप से अभिगमन करने वाली मछलियों के लिए क्षेत्रीय

अनुसंधान सहयोग और वैज्ञानिक भागीदारी और आउटपुट के लिए इस संस्थान की भूमिका पर प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम में 260 से अधिक प्रतिभागियों, जिनमें मछुआरे, छात्र, विभिन्न राज्यों के मत्स्य अधिकारि और विश्वविद्यालयों / अनुसंधान संस्थानों के कर्मचारियों ने भाग लिया। पूरे कार्यक्रम का समन्वय डॉ. ए.के.साहू, डॉ. एस. सामंता, डॉ. बी. के. बेहेरा और उनकी टीम द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम का ऑनलाइन संचालन श्री संजीव कुमार साहू और उनकी टीम द्वारा किया गया।

**जनवरी माह में संस्थान के शोध छात्रों एवं यंग प्रोफेशनल द्वारा विभिन्न अवसरों पर बनायी गई रंगोलियाँ**





## मुख्य शोध उपलब्धियां

- मध्य प्रदेश के सरदार सरोवर जलाशय में मत्स्यपालन के अस्थायी बदलाव की जांच का अध्ययन किया गया जिसके अनुसार प्रायद्वीपीय कार्प, *लैबियो फिस्त्रिएटस* और अर्रिज फिन महासीर, *टोर टोर* की लैडिंग में महत्वपूर्ण गिरावट दर्ज की गई ।
- असम के चार जिलों में सजावटी मछली व्यापार के पैटर्न का अध्ययन किया गया था। इसमें यह देखा गया कि 51.6% फर्म ने 10-20 किस्मों का व्यापार किया जबकि 25.8% ने 20 से अधिक किस्मों का कारोबार किया। इन मछलियों में अधिकांशतः विदेशी प्रजातियाँ थीं जैसे गोल्ड फिश, कवई कार्प, गम्पी, मोलीज़, फिशर फिश, एंजेल फिश, आदि। कुछ देशी सजावटी मछलिया जैसे, *बोटिया डेरियो*, *ब्रेकिडेनिओ रेरियो*, *मिस्टस टेंगरा*, *चंदा नाम*, *हारा हारा*, *पुंटियस कोंकोनियस*, *चत्रा स्टीवर्टी* आदि का भी कारोबार किया गया।
- तमिलनाडु के 54 जलाशयों में मछली स्टॉकिंग और उपज के दशकीय आंकड़ों के विश्लेषण से पता चला कि भारतीय प्रमुख कार्प प्रजातियों के घनत्व का मत्स्य उपज के साथ एक मजबूत सकारात्मक संबंध रहा है। वर्ष 2010-11 में औसत मत्स्य उपज 24.4 किलोग्राम/ हेक्टेयर था जो 2019 में 66 किलोग्राम/हेक्टेयर दर्ज किया गया। मत्स्य उपज में इस वृद्धि का कारण है – वर्ष 2019-20 संस्थान द्वारा विकसित की गयी मत्स्य संवर्धन रणनीतियों को अपनाकर मत्स्य उपज में यह वृद्धि की गयी है।
- पश्चिम बंगाल में 21 बाढ़कृत आर्द्रक्षेत्रों से मत्स्य उपज के आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। पालन आधारित मत्स्य पालन को अपनाने से औसतन मछली उपज बंद बाढ़कृत आर्द्रक्षेत्रों से 1165 किग्रा / हेक्टेयर / वर्ष और खुले बाढ़कृत आर्द्रक्षेत्रों से 864 किग्रा / हेक्टेयर प्रति वर्ष प्राप्त की गयी है। गंगा बेसिन के निचले क्षेत्रों में तीस्ता-टोरसा बेसिन की तुलना में मछली की अधिक उपज हुई है।
- सरदार सरोवर बांध के नर्मदा नदी के बहाव क्षेत्र से 35 फैमिली और 13 ऑर्डर से कुल 98 मछली प्रजातियों को दर्ज किया गया था। नर्मदा नदी प्रणाली से पहली बार सात मछलियों की प्रजातियों की रिपोर्ट किया गया है, जिसमें *ऑवोस ग्राममापोमस* (ब्लिकर 1849), *प्लोटोसस कैनीस* (हैमिल्टन 1822), *थ्रीसा स्टैनोसोमा* (वॉनगाना, 1983), *ताकीफुग ओबलोगस* (बलोच 1786), *औलोपेरिया ओसेलेटा* (डे, 1873), *पाराम्बेसिस लाला* (हैमिल्टन 1822) और *कारैंगोड्स फेरदौ* (फोर्सस्कल 1775) शामिल हैं। ।
- दिसंबर 2020 के दौरान गंगा नदी के प्रयागराज खंड से अनुमानित तौर पर मत्स्य पकड़ 11.320 टन दर्ज किया गया था। पिछले महीने की तुलना में, कुल मछली पकड़ में लगभग 6.97% की कमी आई है। अन्य समूह का योगदान अधिकतम था

(47.17%) और उसके बाद विदेशी मछलियाँ (37.29%), भारतीय प्रमुख कार्प और कैटफिश मछलियों का योगदान क्रमशः 6.75% और 8.79% था। विदेशी कार्प प्रजातियों में कॉमन कार्प मछली की बहुलता देखी गयी है।

- पिंजरे में मछली पालन में मछलियों में होने वाली बीमारियों से आर्थिक नुकसान, जिसमें मृत्यु दर, रसायन / दवाइयों की लागत, विशेषज्ञ सेवायें आदि शामिल हैं, का मूल्यांकन किया गया। इसने अंतर्गत झारखंड के जलाशयों में 133 पिंजरों का मूल्यांकन किया गया और यह देखा गया कि बीमारियों से औसत मृत्यु दर 7.15% पायी गई और इससे होने वाली हानि औसतन रुपये 10,042 प्रति पिंजरा आँका गया। इसके अतिरिक्त, स्वास्थ्य प्रबंधन और रोग नियंत्रण (पोटेशियम परमैंगनेट और चूना, और कुछ मामलों में विटामिन) के लिए रसायनों का उपयोग करने से रुपये 218 प्रति पिंजरा प्रति फसल की लागत मूल्य आँका गया है।

## महत्वपूर्ण बैठकें

- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 23 दिसंबर, 2020 को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से महानिदेशक, राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन की अध्यक्षता में ई-प्रवाह पर एक बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 29 दिसंबर, 2020 को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (*The National Academy of Sciences, India (NASI)*) की सधारण निकाय की बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 1 जनवरी, 2021 को सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (DARE) एवं महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद अध्यक्षता में की अधिकारियों और कर्मचारियों की समीक्षा बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 5 जनवरी, 2021 को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से एक वर्चुअल मीटिंग में भाग लिया, जो जल-शक्ति मंत्रालय के आउटपुट-आउट मॉनिटरिंग फ्रेमवर्क (ओओएमएफ), जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग द्वारा आयोजित किया गया था।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 12 जनवरी, 2021 को नाबार्ड, झारखंड क्षेत्रीय कार्यालय, रांची द्वारा आयोजित “फाइनेंसिंग फिशरी वैल्यू चेन इन झारखंड” पर रिसर्च एडवाइजरी ग्रुप (आरएजी) की बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 30 नवंबर, 2020 को वीडियो आई एडेट वर्किंग ग्रुप की उद्घाटन बैठक में भाग लिया।



● संस्थान के निदेशक ने दिनांक 13 जनवरी, 2021 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मात्स्यिकी संभाग और मत्स्य विभाग, झारखंड के बीच आयोजित पारस्परिक बैठक में भाग लिया। यह बैठक माननीय उप-महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान) की अध्यक्षता में आयोजित की गयी थी।

## कार्यकलाप

- संस्थान में दिनांक 8 जनवरी 2021 को संस्थान की प्रौद्योगिकियों की मानक शर्तों की तैयारी के लिए एग्रिनोवेट इंडिया लिमिटेड के साथ तकनीकी-वाणिज्यिक मूल्यांकन पर आभासी बैठक आयोजित की गई थी। इस व्यावसायीकरण के लिए संस्थान की तीन तकनीकों को मंजूरी दी गई थी।
- संस्थान ने स्वच्छता पखवाड़ा कार्यक्रम अपने मुख्यालय और अनुसंधान केंद्रों में दिनांक 16-31 दिसंबर 2020 के दौरान आयोजित किया। इसके तहत स्वच्छता पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन 20-31 दिसंबर 2020 के दौरान किया गया था।



- संस्थान ने 23 दिसंबर, 2020 से 21 जनवरी, 2021 के दौरान ब्रह्मपुत्र बोर्ड, जल शक्ति मंत्रालय, सरकार द्वारा आयोजित "आमंत्रण ब्रह्मपुत्र अभियान" में भाग लिया। इस कार्यक्रम में संस्थान के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र गुवाहाटी ने ब्रह्मपुत्र नदी में पासीघाट से धुबरी तक हुये राफ्टिंग अभियान में भाग लिया। नदी के विभिन्न भागों में जल और मिट्टी की गुणवत्ता तथा जलीय जीवों का आकलन किया गया था। इसके अंतर्गत संस्थान ने इस अभियान के तहत पासीघाट, माजुली और गुवाहाटी में आयोजित जन जागरूकता कार्यक्रमों और प्रदर्शनियों में भी भाग लिया।

## प्रशिक्षण

- दिनांक 8 जनवरी 2021 "बील मत्स्य प्रबंधन" पर आयोजित एक ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम में असमिया भाषा में किया गया था। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में असम के कुल 54 मछुआरों / बील लाइसेज ने भाग लिया।

- दिनांक 12 जनवरी 2020 को "आजीविका सुधार के लिए हिल्सा मत्स्य संरक्षण" पर एक ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें कुल 260 मछुआरों / मछली किसानों ने भाग लिया।



- दिनांक 19 जनवरी 2021 को "अंतर्स्थलीय खुला जल में पिंजरा



- पालन के माध्यम से उत्पादन संवर्धन" पर एक ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया था। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में देश के आठ राज्यों के 400 मछुआरों ने भाग लिया।

- दिनांक 19-24 जनवरी, 2021 के दौरान जीव विज्ञान, कछार कॉलेज, असम के सेंटर फॉर इंडस्ट्रियल फिश एंड फिशरीज, कछार कॉलेज, सिलचर, असम और कॉलेज ऑफ फिशरीज, लिम्बुचेरा, त्रिपुरा के छात्रों के लिए "फिश एंड फिशरीज मैनेजमेंट" पर एक ऑनलाइन जॉब ट्रेनिंग प्रोग्राम चलाया जा रहा है।

- ओडिशा के मछुआरों के लिए " खुला जल में पेन में मछली पालन के माध्यम से उत्पादन वृद्धि" पर एक ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम दिनांक 22 जनवरी 2021 को आयोजित किया गया था। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 100 मछुआरों ने भाग लिया।



- पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले में स्थापित दो पेन क्षेत्रों में भारतीय प्रमुख कार्प और अन्य कार्प प्रजातियों के 30000 बड़ी अंगुलिकाओं के साथ संचयित किया गया ।

## सेवानिवृति

### श्री सौमित्र रॉय, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी

संस्थान मुख्यालय में कार्यरत श्री सौमित्र रॉय, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी दिनांक 31 जनवरी 2021 को संस्थान मुख्यालय से



सेवानिवृत्त हुये। श्री रॉय ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की सेवा में दिनांक 21 जनवरी 1990 को तकनीकी सहायक (टी-II-3) के तौर पर सेवाभार ग्रहण किया था। श्री रॉय का कार्य संस्थान के इंजीनियर (सिविल) संबधित कार्यकलापों का संचालन करना था। अपने कार्यों में दक्षता और लगन के कारण उनकी पदोन्नति होती रही – वर्ष 2000 में टी-4 (तकनीकी सहायक), वर्ष 2005 में तकनीकी सहायक, वर्ष 2010 में वरिष्ठ तकनीकी

सहायक और वर्ष 2015 में सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी। संस्थान उनके सेवानिवृत्त पर उन्हें अपनी शुभकामनाएँ देता है।

### श्रीमति स्वपना चैटर्जी, सहायक

दिनांक 31 जनवरी 2021 को संस्थान मुख्यालय में कार्यरत सहायक, श्रीमति स्वपना चट्टोपाध्याय संस्थान से सेवानिवृत्त हुई हैं।



श्रीमति चट्टोपाध्याय ने संस्थान में दिनांक 13 फरवरी 1985 को कनिष्ठ लिपिक के तौर पर अपनी सेवायें आरंभ की थीं। अपने कार्यों में दक्षता और लगन के कारण उनकी पदोन्नति होती रही – वर्ष 1998 में वरिष्ठ लिपिक और वर्ष 2014 में सहायक। संस्थान उनके सेवानिवृत्त पर उन्हें अपनी शुभकामनाएँ देता है।



**श्री अमरनाथ प्रसाद, कुशल सहायक**

संस्थान के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, प्रयागराज में कार्यरत श्री जयराम प्रसाद, कुशल सहायक की सेवानिवृत्ति बैरकपुर से दिनांक 31 जनवरी 2021 को हुई। श्री अमरनाथ प्रसाद ने संस्थान में अपना कार्यकाल का आरंभ दिनांक 07.11.1988 से सपोर्टिंग ग्रेड-I के तौर पर किया था। सेवाकाल के दौरान उनकी पदोन्नति वर्ष 1999 में एसएसजी (ग्रेड.II) और वर्ष 2008 में कुशल सहायक के तौर पर हुई।



**सम्पादक मण्डल**

सम्पादक मण्डल की ओर से सभी सिफरी मासिक समाचार के पाठकों को वर्ष, 2021 की हार्दिक शुभकामनाये। सम्पादक मण्डल के तरफ से सभी पाठकगण को पर्व की हार्दिक बधाई और ढेरों शुभकामनाएँ! सम्पादक मण्डल, श्री सौमित्र रॉय, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी ,श्रीमति स्वपना चैटर्जी, सहायक ,श्री अमरनाथ प्रसाद, कुशल सहायक के स्वस्थ एवं सुखी अवकाश जीवन के लिए हार्दिक शुभ कामनाएँ देता है। आप सभी को संपादक मण्डल की तरफ से धन्यवाद !

# समाचार पत्रों एवं संचार माध्यम में

**इलिश बाँचाते**  
**भार्चुयल सेमिनार**  
**करल सिफरि**  
निज्ज प्रतिनिधि, बाराकपुर: दिन दिन गप्पाय कमहे इलिशेर जेगान। तहि इलिश बाँचाते मद्रलवार एकटि भार्चुयल सेमिनारेर आयोजन करल बाराकपुरेर सिफरि (अहिंसिआर-सेन्ट्राल इनल्यान्ड फिशरि रिसार्च इनस्टिटुट)। विवेकानन्देर जन्मदिन उपलक्षे एहि दिनटि निर्वाचित करा हय। भार्चुयल सेमिनार तथा ओयेबिनारे अहिंसिआर-सेन्ट्राल इनल्यान्ड फिशरि रिसार्च इनस्टिटुटिटेर डिरेक्टर डः वसन्तकुमार दास, अन्यान्य विज्ञानीरा, कर्मचारी एवंग संह्वाय गबेयणारत एकाधिक छात्रछात्री अंशे नियेछिलेन। एछाडाओ देशेर विभिन्न प्रांत्त थेके सरकारि आधिकारिक, छात्रछात्री, गबेयक एवंग मंस्यजीवीराओ अंशे नैने। सबचेये उल्लेखयोग्या, प्रतिवेशी राष्ट्रि बांग्लादेश थेकेओ बेश कयेकजन गबेयक अंशे नियेछिलेन। ताँदेर मध्ये छिलेन अध्यापक गयाहाब आपुल। यिनि इलिश माछ निये दीधदिन धरे गबेयणा करछेन। तिनि तारि गबेयणार अभिज्ञतार कथाओ आलोचनाय तुले धरेन। वसन्तबाबु जानान, बांग्लादेशे इलिशेर जेगान।



सिफरि इलिश संरक्षण कर्मसूचि

**प्रकाशन मंडल**

**प्रकाशक:** बसन्त कुमार दास, निदेशक,

**संकलन एवं सम्पादन:** संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, गणेश चंद्र, राजीव लाल, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

**संकलन एवं सम्पादन सहायता:** मो. कसिम **फोटोग्राफी:** सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यकी अनुसंधान संस्थान,(आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत  
दूरभाष: +91-33-25921190/91; फैक्स: +91-33-25920388; ई-मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in